श्री शीतलनाथ जिनपूजा

शीतलनाथ नमों धरि हाथ, सुमाथ जिन्हों भवगाथ मिटाये।
अच्युततैं च्युत मात सुनन्द के, नन्द भये पुरभद्दल भाये।।
वंश इक्ष्वाक कियौ जिन भूषित, भव्यनको भव पार लगाये।
ऐसे कृपानिधि के पदपंकज, थापतु हौं हिय हर्ष बढ़ाये।।१।।

३/९
पीले चावल/लौंग क्षेपण करना

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

झारी से जल

देवापगा सुवरवारि विशुद्ध लायौ,
भृंगार हेमं भरि भक्ति हिये बढ़ायौ।
रागादिदोष मलमर्द्दनहेतु येवा,
चर्चों पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चन्दन जल

श्रीखंडसार वर कुंकुम गारि लीनौं।
कंसंग स्वच्छ घसि भक्ति हिये धरीनों।। रागादिदोष...

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

सफेद चावल

मुक्तासमान सित तंदुल सार राजैं।
धारंत पुंज कलिकुंज समस्त भाजैं।। रागादिदोष...

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पीले चावल

श्रीकेतकी प्रमुख पुष्प अदोष लायो।
नौरंग जंगकरि भृङ्ग सुरंग पायौ।। रागादिदोष...

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

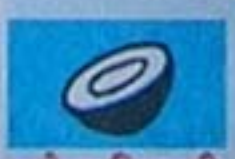

सफेद चिटकी

नैवेद्य सार चरु चारु संवारि लायौ।
जांबूनद-प्रभृति भाजन शीस नायौ।। रागादिदोष...

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

पीली चिटकी

स्नेह प्रपूरित सुदीपक जोति राजै।
स्नेह प्रपूरित हिये जजतेऽघ भाजै।। रागादिदोष...

ॐ ह्रीं शीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

धूप

कृष्णागुरु प्रमुखगंध हुताश माहीं।
खेवों तवाग्र वसुकर्म जरंत जाहीं।। रागादिदोष...

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धुपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

फल

निम्बाम्र कर्कटि सु दाड़िम आदि धारा।
सौवर्ण गंध फलसार सपक्क प्यारा।। रागादिदोष...

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

अर्घं

कंश्रीफलादि वसु प्रासुक द्रव्य साजे।
नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे।। रागादिदोष...

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

पंचकल्याणक

छंद इन्द्रवज्त्रा गथा उपेन्द्रवज्त्रा

आठैं वदी चैत सुगर्भ माहीं, आये प्रभू मंगलरूप थाहीं।
सेवै सची मातु अनेक भेवा, चर्चौंसदा शीतलनाथ देवा।।१।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री माघ की द्वादशि श्याम जायो, भूलोक में मंगल सार आयो।
शैलेन्द्र पै इन्द्र फनिन्द्र जज्जै, मैं ध्यान धारों भवदुःख भज्जे।।२।।

ॐ ह्रीं श्री माघकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व. स्वाहा।

श्री माघ की द्वादशि श्याम जानों, वैराग्य पायो भवभाव हानों।
ध्यायौ चिदानन्द निवार मोहा, चर्चौं सदा चर्ण निवारि कोहा।।३।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घम् निर्व. स्वाहा।

चतुर्दशी पौषवदी सुहायो, ताही दिना केवललब्धि पायो।
शौभै समोसृत्य बखानि धर्म, चर्चौं सदा शीतल पर्म शर्म।।४।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां केवलज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व.स्वाहा।

कुँवार की आठैं शुद्ध बुद्धा, भये महामोक्षसरूप शुद्धा।
सम्मेदतैं शीतलनाथ स्वामी, गुनाकरे तासु पदं नमामी।।५।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टभ्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वं. स्वाहा।

जयमाला

आप अंनत गुनाकर राजैं, वस्तुविकाशन भानु समाजैं।
मैं यह जानि गही शरना हैं, मोहमहारिपु को हरना हैं।।१।।

दोहाः- हेम वरन तन तुंग धनु, नव्वै अति अभिराम।
सुरतरु अंक निहारि पद, पुनि पुनि करों प्रणाम।।२।।

छंद तोटक (वर्ण १२)

जय शीतलनाथ जिनन्द वरं, भवदाघ दवानल मेघझरं।
दुख-भूभृत-भंजन वज्रसमं, भवसागर नागर-पोत-पमं।।३।।

कुह-मान-मया-गद-लोभ हरं, अरि विघ्न गयंद मृगेन्द वरं।
वृष-वारिदवृष्टन सृष्टिहितू, परदृष्टि विनाशन सृष्टुपितू।।४।।

समवस्त्रत संजुत राजतु हो, उपमा अभिराम विराजतु हो।
वर बारहभेद सभाथित को, तित धर्म बखानि कियौ हितको।।५।।

पहले महिं श्रीगजराज रजै, दुतिये महि कल्पसुरी जु सजें।
त्रितिये गणना गुन भूरि घरैं, चवथे तिय जोतिष जोति भरैं।।६।।

तिय विंतरनी पनमैं गनिये, छहमें भुवनेसुरती भनिये।
भुवनेश दशों थित सप्तम हैं, वसुमें बसुचिंतर उत्तम हैं।।७।।

नव में नभजोतिष पंच भरे, दशमें दिविदेव समस्त खरे।
नरवृन्द इकादशमें निवसैं, अरु बारह में पशु सर्व लसैं।।८।।

तजिवैर, प्रमोद धरैं सब ही, समतारस मग्न लसैं तब ही।
धुनि दिव्य सुनैं तजि मोहमलं, वनराज असी धरि ज्ञानबलं।।९।।

सबके हित तत्व बखान करैं, करुना मनरजित शर्म भरैं।
वरने षटद्रव्य तनें जितने, पर भेद विराजतु हैं तितने।।१०।।

पुनि ध्यान उभै शिवहेत मुना, इक धर्म दुती सुकलं अधुना।
तित धर्म सुध्यान तणों गुनियो, दशभेद लखे भ्रमको हनियो।।११।।
पहलो अरि नाश अपाय सही, दुतियो जिनवैन उपाय गही।
त्रित जीवविचै निजध्यावन हैं, चवथो सु अजीव रमावन हैं।।१२।।
पनमों सु उदै बलटारन हैं, छहमों अरि राग निवारन हैं।
भव त्यागन चिंतन सप्तम हैं, वसुमों जितलोभन आतम हैं।।१३।।
नवमों जिनकी धुनि सीस धरै, दशमो जिनभाषित हेतु करै।
इमि धर्म तणों दश भेद भन्यो, पुनि शुक्लतणो चदु येम गन्यो।।१४।।
सुपृथक्त-वितर्क-विचार सही, सुइकत्व-वितर्क-विचार गही।
पुनि सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपात कही, विपरीत -क्रिया-निरवृत्त लही।।१५।।
इन आदिक सर्व प्रकाश कियो, भवि जीवनको शिव स्वर्ग दियो।
पुनि मोक्षविहार कियो जिनजी, सुखसागर मग्न चिरं गुनजी।।१६।।
अब मैं शरना पकरी तुमरी, सुधि लेहु दयानिधिजी हमरी।
भव व्याधि निवार करो अब ही, मति ढोल करो सुख द्यो सब ही।।१७।।

छंद घत्तानंद

शीतल जिन ध्याऊं भगति बढ़ाऊं, ज्यों रतनत्रयनिधि पाऊं।
भवदंद नशाऊं, शिवथल जाऊं, फेर न भौवन में आऊं।।१८।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय महार्घम निर्वपामीति स्वाहा।

छंद मालिनी

दिढ़रथ सुत श्रीमान्, पंचकल्याणक धारी,
तिनपद जुगपद्मं, जो जजै भक्तिधारी।
सहसुख धनधान्यं, दीर्घ सौभाग्य पावै,
अनुक्रम अरिदाहै, मोक्ष कों सो सिधावै।।१९।।

इत्याशीर्वादः।

(पुष्पांजलिं क्षिपेतः)